(कार्यक्षात्रक अध्यक् कार्किव सार्किवयम् में स्कृतिहाद्दे त्यात्मात्रका कंवेठ स्मा लाधिक्यात्रक सन्मिक व्यक्षित व्यक्षित व्यक्ति विकास मान्य नाकी लाशकश रूप वालिववाण हेमिल्डिं। एक ट्रेमिल्डिंध लागिकश लियसी राष्ट्र कार्य मार्थ अस्ति अस्ति एक रेमिन्द्रियं लगायो लवकारमं अवी दुशस्य भासकताम त्रमेश हार्ध्यकातात्री। त्वातिको ' प्रिक्रिमावित्र त वंदारांव ताति एव र्यक्रवितं अंक्यान हारि अविशिषक्ष वाष्ण्य लामिस्मिक अक्षितक्षं त्वामीन ्यारंथा रेष अशिष्यं प्रते । त्यं श्रात यिक्षिं मानकाम ल्पित्व राश्य लावं स्वाह्मं यावं पात्रेश्यल अंग लाधिक्युक (% किए कार्किय अपस्थित कार्यवात कार्याय कार्याय स्थाप स्थाप ल्यार्यं त्रांवा व्यवेद्यामुक क्षां एक स्थार्यं खिद्ध देवत अक्षित्र सिक्षे यासिवं अपूरी स्थि लाख्यात् रजं दिए लावं त्य देपर इस लायेक्मुक्क याल्युक्त याल्यका ! कालियमार्थ रेमिल्लिका हिमार्पं व्यक्तिल क्रामिक्शोवं द्यावं अर्थे त्यारंगात कवंत क्रां प्रावकाण व्यक्तिवं विद्रास स्प्रिट इस स्प्रिकारी सिक्ष्य कर्ता का दस क्रिकार्थन व्यात्रह रहाक था तक्ष ' अविशिष्ठ जात न कर अरि अर्थे अर्थे अकृतिए एम्सन , नासान अकृतिएख एक्सन कियु आर्थनिक कियामात काल कार्न किर विश्विति हिन्नि इतिए शाम जेश अक्षाल हिक्साप थिएंड कारा कंदल डाव त्वसं क्षेत्र कार भूकं क त्यातं स्वरेतम त्यातं थनं वेश्वाव व्यक्ति तामध व्यक्ति अपन उत्त हास्पर्व ग्रेश , उनेन्द्राम् , यिया - तार्वेष्ण कार्त्वीकांव कांव सक्षित् त्यानुक ल्यामाल्य त्यामित्या ल्यामक कथ्याचा मिद्रा त्यांक स्कृतें थंग। त्य लाशवा तवं कार्येकारी कात करातं त्याहिं ह्मांक्यक्री वंक्ष्य कर्तं ताकि क्रीक्यक् क्रीक्या कर्तं एक लाखेर अविश्वकात खिर्षेष उ दिन्दरमाश्चिव थुम्लिव कका गलापुत, अन्तिकाराय जान Politics Among Mations (1948)

logo The Dealine of Democratic Palities offices काली अत्वर्धा वर्षे क्षाटकात्राम् अति व्यादकात्राम् अपनाता मान्यां जावतां स्थान स्थान व्यक्ता वात्रेव अभाव कारात काराय कार्याय अव्यक्तिमा द्वा भारते अव्यक्तिमार्थ वार्व अव्यक्ति क्षेत्रक हात्रका कार्यात्रक मार्थिक प्राप्तिक कार्यात्रका कार्य मार्थिक T सम्प्रतां प्रांत यंगलपुर् त त्यम कवर्षाण वात्ववपुर्व संवर पांत्रहम् भाव को आंच हिट्टा व्यक्ति ल्लाह आधार का का का का @ क्यें कार्य अस्ति । त्ये अवस्ति । व अस्ति व क्यें क्या क्या । व्या मध्ये वात्राशिक लिये स्परीशि क्वल वात्राधाकक श्राधावण बीस्त्रीत त स्वाक्षित्रम् अवंत आणं अवस्थाता नावं स्थान सवंवर्तिथान हिन्दे कर्नुकार्त नामक प्रात्म क्रान्स्य क्रिक्स क्रिक्स क्रिकायली त करिएक प्रायम् कार्य प्रतात कार्य कार्य कार्या कार्या कार्या व वर्षाक्षांत महाम धन । वर्षाक्ष भीत्र महिल महिल महिल त क तथा का अपन नहां ते पाल काण काण मिंदी भारत प्राथन कामास्य उत्त काला कारमान्त्र । @ मार्डिक मार कार कार ता द्वारा कार्डिक नार्डिक नार्डिक मार्डिक मार्डिक नार्डिक नार्ड ल्पिक्षाक्रक यात्राश्मात्रेव ल्पार्वेश्यां लियात्र्य मेत्राय स्थापी क्षित क्षात्राम लेगम । या विकिता वामिष्यां क्षात्रीम विवास कवांच अपित वहांचा अपक्रीय क्रियंच क्रावंद्र है।वहां त्याखा कार्या प्राथन प्राथन कार्याचित्र या क्रांचाम थ्राप्त क्रांचा वाजातीके अनुवादत वादाक अपित ता वा वाजातीकिक वा ल्यापी वालास्त्रक क्षिणंव अपूरी व्यवस्था सुरीक्ष कवत व्याचि ता। क्राक्ष्म मंद्राक निक्रिक्यमें निक्रिक्यमें निक्रिक्यमें क्षावकारक रक्षान वा कार्यविवर्षकीय वाल आह कार ना अल्या त त्त्रमाथित व्यक्तिवृत्तित अरित अरित व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति इस्म आरं वित स वार्वामिक ७ वक उत्तर्माकेक वर्षेत्रविक वर्षेत्रविक मिल अववासितीति अती द्रां अव हिम्द किले कर्त वार्क वार्क

ध्याः व्यवस्थितः कां कार्तित छितः स्थितः व्यक्ति क्षात्रा क्षेत्रं अप्रिं अधिक्ष्यातः के काल त्यक्ष्यं नीकि त्य भुति क्षित्रं तैत्वेन क्षात्र्यम् प्रतिकृत्यातः का स्थित्वातः क्षित्रं प्रतिकं क्ष्यात्याः क्षात्रं भावतः क्षातः क्षात्रं क्षात्रं व्यक्षितः भावतः व्यक्तिः अप्राप्तिः क्षात्रं भावतः क्षातः व्यक्षित्वः पृति विवक्षितः अप्रयाद्धः कार्यम् विवित्रं क्षात्रं भ्रम् वावतः

व्यक्त स्पक्त्यां प्राक्तिक क्ष्मिक क्ष्मिक व्यक्ति व्यक्ति क्ष्मिक क

क्षितक वाल्यानुक दिवानं लच्छा रूपा सक्षेत्र कर्तन । नामित्र त स्मास्त्रीकनातक त्यीकानं करतं वर्त्व लच्छात्रन नकाल्यान्त्र ठवे काल्यानुक दिवा होत्यत लच्छात्रो अवनत्यामानुक दिवानं वालातं क्षेत्र राज्य लच्छात्र अञ्चलक्ष्य अवस्थात्र व्यक्ति स्वेत्र अवस्था

3/3/17/6/15/61/ !-

विद्धि अक्ष अविवास्तान्त्र कार्यात्म । कार्यात्म अव्याप्त कार्यात्म । क्षेत्र विद्यात्म विद्यात्म कार्यात्म कार्यात

ভাষামত

पाक्री काथि कर लाइएए के जिन्न क्यार क्रिकेट त्रिक का क्रिकेट का क

मिक्रिक

किये उत्तं अपत्य था लाह विविधांत्रेय व्यवस्त्र अति। विश्वया एमं कुषे यालित द्वाप प्रमाह त्यक व्यांग्यांत् कार्व प्रत्याप श्वश्वता तकार त्यांत्रा त्यां व्यांत्र क्राम्यायं व्यां भ्रेष्य विशिवाक त्यार लायां त्राप्त इत्यात स्था

लिंडी एकी स्थापिक व्यक्ति व्य

कवान मही करत।
लाधिमाधनी एता केर्स सिहासिन लाधे प्रमुखिन लाधिमाखिन अवस्था कार्या प्रमुखिन लाधिमाखिन अवस्था कार्या कार्या